डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान,

11–अशोक रोड, नई दिल्ली

www.indiannationalism.org

पराक्रमयुता प्रज्ञा राष्ट्राभ्युदयसाधिका

राष्ट्रीय घटनाक्रम गवाक्ष मालिका

क्रमांक–पाँच

'भारतीय जनता पार्टी, दिल्ली प्रदेश'

द्वारा आयोजित

''महिला सुरक्षा– कितने सुरक्षित हैं हम?''

विषय पर परिचर्चा

मुख्य वक्ता	:	श्रीमती सुषमा स्वराज, (उपनेता, राज्यसभा एवं संसदीय दल प्रवक्ता)
वक्ता गण	:	प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा, (उपनेता, लोकसभा एवं संसदीय दल प्रवक्ता) डॉ. हर्ष वर्धन, (दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष, भाजपा) श्री प्रकाश जावडेकर, (राष्ट्रीय प्रवक्ता, भाजपा) श्री चन्दन मित्रा (वरिष्ठ पत्रकार, संपादक–'द पायनियर') सुश्री निधि कुलपति (वरिष्ठ टीवी पत्रकार, एनडीटीवी)
संयोजिका	:	सुश्री वाणी त्रिपाठी, (राष्ट्रीय सचिव, भाजपा युवा मोर्चा)
दिनांक	:	शनिवार, 11 अक्तूबर 2008
स्थान	:	कान्स्टीट्यूशन क्लब, नई दिल्ली

'काम पर निकलना मेरी ज़रूरत है, ''दुस्साहस'' नहीं' की तर्ज पर शनिवार 11 अक्तूबर 2008 को नई दिल्ली स्थित कॉन्स्टीट्यूशन क्लब में 'भारतीय जनता पार्टी, दिल्ली प्रदेश' द्वारा 'महिला सुरक्षा–कितने सुरक्षित हैं हम?' विषय पर एक परिचर्चा का आयोजन किया गया। जिसमें दिल्ली में महिलाओं पर दिन–प्रतिदिन बढ़ते अपराधों पर गंभीरता से चर्चा की गई, और महिला सुरक्षा से संबंधित कानूनों को शक्ति से लागू करने पर विचार किया गया। परिचर्चा में मुख्यरूप से लोकसभा में विपक्ष के उपनेता व भाजपा दिल्ली प्रदेश के मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा, डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान के सचिव व दिल्ली भाजपा प्रदेश अध्यक्ष डॉ. हर्ष वर्धन, भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री प्रकाश जावडेकर, वरिष्ठ पत्रकार व 'द पायोनियर' के संपादक श्री चंदन मित्रा और नई दिल्ली टेलीविजन की वरिष्ठ टीवी पत्रकार सुश्री निधि कुलपति आदि मुख्य रूप से उपस्थित रहीं। कार्यक्रम का संचालन सुश्री वाणी त्रिपाठी ने किया।

परिचर्चा सत्र का उद्घाटन करते हुए भारतीय जनता पार्टी के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष डॉ. हर्ष वर्धन ने दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित के उस बयान को 'संवेदनहीनता की पराकाष्ठा' करार दिया जिसमें उन्होंने कहा था कि रात के वक्त महिलाओं को घर से बाहर नहीं जाना चाहिए। श्रीमती दीक्षित ने यह वक्तव्य टीवी पत्रकार सौम्या विश्वनाथन के संदर्भ में दिया था जिनकी 29 सितंबर की अर्द्धरात्रि को संदिग्ध परिस्थितियों में गोली मारकर हत्या कर दी गयी थी। उन्होंने कहा कि यह हम सभी के लिए बड़ा अफसोसजनक है कि सौम्या की हत्या के ग्यारह दिन बाद भी हमारी पुलिस के पास कोई सुराग नहीं है। डॉ. हर्षवर्धन ने कहा कि दिल्ली की अपेक्षा मुम्बई में महिलाएं रात में ज्यादा स्वतंत्र होकर घूमती हैं। जेसिका लाल हत्याकाण्ड में मीडिया की सकारात्मक भूमिका की प्रशंसा करते हुए भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि मीडिया द्वारा जेसिका के केस को प्रकाश में लाने से ही उसके दोषियों को सजा मिल पायी और अब महिला सुरक्षा के समाधान के लिए हमें राजनीति से ऊपर उठकर गंभीरता से चिंतन करना होगा, तभी भारत की राजधानी दिल्ली में हम अपनी बहनों को सुरक्षित रख सकते हैं।

इस अवसर पर दिल्ली की भूतपूर्व मुख्यमंत्री और राज्यसभा में विपक्ष की उपनेता श्रीमती सुषमा स्वराज ने कहा कि भारत की राजधानी दिल्ली में महिलाओं पर अत्याचार, अनाचार, अपहरण या बलात्कार की घटनाओं से भारत की छवि विदेशों में काफी खराब होती जा रही है, क्योंकि किसी भी देश की तरक्की का आंकलन उस देश की राजधानी से किया जाता है। उन्होंने कहा कि दिल्ली की ये घटनाएं भारत की छवि पूरे विश्व में खराब कर रहीं है। श्रीमती स्वराज ने दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित से तीन प्रश्नों की जवाबदेही मांगते हुए कहा कि मुख्यमंत्री जी बताएं कि **दिल्ली में महिलाओं के लिए कौन सा प्रहर सुरक्षित है**? सुबह शौचालय जाती महिलाओं का बलात्कार, भरी दोपहर में लड़कियों के कपड़े फाड़े जाते है, शाम को बाजारों और बसों में छेड़खानी, रात्रि को बियर–बारों में शोषण और अर्द्ध रात्रि के बाद सौम्या विश्वनाथन जैसी महिला पत्रकार की हत्या – ये घटनाएं क्या बताती हैं?

दिल्ली में कौन–सी उम्र की महिलाएं सुरक्षित हैं? पांच वर्ष की बच्ची का अपहरण, 16 वर्ष की युवती से बलात्कार, 25 वर्ष की महिला के साथ छेड़खानी और 40 वर्ष की महिला की हत्या कर दी जाती है। **दिल्ली में कौन–सी जगह सुरक्षित है?** स्कूल, कॉलेज या विश्वविद्यालय, बस–स्टॉप या रेलवे स्टेशन, शॉपिंग माल्स, बीयर बार या फिर दिल्ली की सड़कें।

श्रीमती सुषमा स्वराज ने कहा कि युग के अनुसार बाहर निकलना लड़कियों की मजबूरी है। मीडिया, कॉल सेन्टर, अस्पताल या विमान कम्पनियों में लड़कियों को रात की पाली में भी काम करना पड़ता है अगर वह रात में बाहर असुरक्षित महसूस करेगी तब वह कैसे स्वतंत्र रहेंगी? उन्होंने कहा कि मैंने अपने 40 दिन के मुख्यमंत्री कार्यकाल में चुनौती देकर कहा था कि मैं रात को जागूंगी ताकि लोग चैन से सो सके और ऐसा करके दिखाया था। श्रीमती स्वराज ने कहा कि उन दिनों अखबारों की सुर्खियां बदल गयी थीं क्योंकि शासन सतर्क होकर जनता का प्रहरी बनकर सड़कों पर निकल गया था। उन्होंने कहा कि आज बस दृढ़ इच्छाशक्ति की जरूरत है, दिल्ली की कानून व्यवस्था तो सिर्फ सात दिन में सुधर सकती है।

भाजपा की ओर से दिल्ली प्रदेश के मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार और लोकसभा के विपक्ष के उपनेता प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा ने केन्द्रीय गृहमंत्री श्री शिवराज पाटिल के उस बयान की तीखी आलोचना की, जिसमें उन्होंने कहा था कि हम हर आदमी को सुरक्षा प्रदान नहीं कर सकते। श्री मल्होत्रा ने कहा कि दिल्ली की कानून–व्यवस्था गृहमंत्री के पास है, जिन्होंने कभी भी सांसदों के साथ बैठक नहीं की। अगर वे दिल्ली को सुरक्षित नहीं रख पा रहे हैं तो उन्हें गृहमंत्री बने रहने का कोई अधिकार नहीं है। उन्होंने कहा कि दिल्ली में अगर हफ्ता वसूली और थानों की नीलामी बंद हो जाए तो अपराधों पर आसानी से काबू पाया जा सकता है।

भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री प्रकाश जावडेकर ने कहा कि हमारे विकास के मापदण्ड में भौतिक तरक्की के बजाए सामाजिक तरक्की को शामिल करने की जरूरत है। श्री जावडेकर ने कहा कि मुख्यमंत्री समाज की मानसिकता का परिचायक होती है। उनके राज्य में प्रजा रात में कहीं भी जा सके, वहीं उनके काम का प्रमाण होना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमारे समाज में महिलाओं को सुरक्षित रखना है तो पुरूषों को अपनी बीमार मानसिकता को बदलना होगा साथ ही दण्ड का भाव ऐसा हो कि रात में भी चलने वाली महिला को कोई तिरछी नजर से न देख सके। श्री जावडेकर ने कहा कि इसमें शासन की विफलता साफ दिखाई देती है और जब तक समाज में समता–समानता का भाव पैदा नहीं होगा तब तक हम सही मायने में सामाजिक तरक्की नहीं कर पायेंगे।

एनडीटीवी की वरिष्ठ पत्रकार सुश्री निधि कुलपति ने कहा कि सिर्फ लड़कियां ही नहीं बल्कि लड़के भी अपराध के शिकार हैं और इसके खिलाफ लड़ने के लिए सुरक्षा के साथ आत्मविश्वास की भी जरूरत है। सुश्री कुलपति ने बताया कि दिल्ली में 27 प्रतिशत अपराध होते हैं, जो कि भारत में सबसे ज्यादा है। उन्होंने कहा कि इसका मुकाबला करने के लिए कानून का डर बनाने की जरूरत है क्योंकि अपराधी सोचता है कि अपराध करने के बाद तो हम छूट जायेंगे। समाज में किसी को भी पुलिस व्यवस्था में विश्वास नहीं है जो हमारे समाज के लिए घातक साबित हो रही है।

सौम्या विश्वनाथन के बारे में की गई टिप्पणी को संवेदनहीनता का उदाहरण मानते हुए वरिष्ठ पत्रकार श्री चंदन मित्रा ने कहा कि यह महिलाओं का अपमान है। उन्होंने कहा कि पूरे दिल्ली शहर में असुरक्षा की भावना व्याप्त है और दिल्ली को एक 'रेप कैपिटल' का दर्जा मिलना हम सभी के लिए बेहद शर्म की बात है। श्री मित्रा ने कहा कि हालांकि सुरक्षा प्रदान करने की जिम्मेदारी शासन और प्रशासन की है लेकिन यह सामाजिक मानसिकता में परिवर्तन के बगैर संभव नहीं हो सकती है। इस अभियान में महिला और पुरूष दोनों की समान भागीदारी की जरूरत है। उन्होंने कहा कि शासन सिर्फ कानून बनाकर इसे नजरअंदाज कर रहा है जबकि सरकार को कानून सख्ती से लागू कर उसके क्रियान्वयन पर ध्यान देने की जरूरत होती है। श्री मित्रा ने कहा कि ऐसे में महिलाओं के साथ हम–सब को पुलिस व राजनेताओं से जवाबदेही मांगने और महिला उत्पीड़न के खिलाफ जनजागरण और जनांदोलन पैदा करने की जरूरत है। सामाजिक मानसिकता में विकृतियों के खिलाफ जागरूकता पैदा करने के लिए सामाजिक संस्थाओं और राजनीतिक दलों का आह्वान करते हुए श्री चंदन मित्रा ने कहा कि हमारा राखी का त्योहार इसमें हमारी सहायता कर सकता है। उन्होंने भाई–बहन के प्रेम का त्योहार 'राखी' को ***'महिला सुरक्षा दिवस'*** के रूप में मनाने की सलाह दी।

प्रदीप कुमार मिश्रा
डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान